आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-128/2015-2017
प्रेषण :- कार्यालय शास्त्री सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

दैनिक

● मुद्रण तारीख - 05-05-2016 ● अंक-515 ● तारीख - 06 मई 2016, वैशाख कृष्ण - 15 ● शुक्रवार ● उदयपुर ● कुल पृष्ठ-02 ● मूल्य-1 रूपया ● पृष्ठ-01

अनमोल वचन (सत्यसाई बाबा)

नया युग

मेरे बच्चो ! एक महान परिवर्तन का समय आ गया है, मानव मात्र के लिए जागने का समय। स्वयं अपनी आत्म-परीक्षा करो और ऐसे परिवर्तन लाओ जो तुम्हें वापस ईश्वरीयता की ओर ले जा सकें। **-श्री सत्य सांई बाबा**

कबीर दास जी के दोहे

बुरा जो देखन मैं चला,
बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा आपना,
मुझसे बुरा न कोय।

अर्थ :- जब मैं इस संसार में बुराई खोजने चला तो मुझे कोई बुरा न मिला, जब मैंने अपने मन में झाँक कर देखा तो पाया कि मुझसे बुरा कोई नहीं है।

पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ,
पंडित भया न कोय,
ढाई आखर प्रेम का,
पढ़े सो पंडित होय।

अर्थ:- बड़ी बड़ी पुस्तकें पढ़ कर संसार में कितने ही लोग मृत्यु के द्वार पहुँच गए, पर सभी विद्वान न हो सके, कबीर मानते हैं कि यदि कोई प्रेम या प्यार के केवल ढाई अक्षर ही अच्छी तरह पढ़ ले, अर्थात प्यार का वास्तविक रूप पहचान ले तो वही सच्चा ज्ञानी होगा।

अब 139 नम्बर डायल कर कैंसल करा सकेंगे यात्री रेल टिकट

रेल्वे में यात्रा करने वाले यात्री अब 139 डायल कर अपना टिकट रद्द करवा सकते हैं। नई सुविधा के तहत रेल यात्री अब 139 नम्बर डायल करके अपने टिकट को रद्द करवाने के लिए अपनी जानकारियां दे सकते हैं। इसके बाद उन्हें वन टाइम पासवर्ड (ओटीपी) मिलेगा। यात्री इस ओटीपी के माध्यम से रेलवे आरक्षण केंद्र जाकर अपने भुगतान का दावा कर सकते हैं। यात्री को टिकट बुक करवाते समय अपना मोबाइल नम्बर दर्ज कराना होगा। 139 के अलावा यात्री आईआरसीटीसी की वेबसाइट के माध्यम से भी अपना टिकट निरस्त करवा सकते हैं।

पापनाशिनी अमावस्या- वैशाख अमावस्या

वैशाख कृष्ण पक्ष अमावस्या को पापनाशिनी अमावस्या कहा जाता है। सामान्यतः सभी महीनो की अमावस्या पर्व तिथि मानी गयी हैं। किन्तु सूर्य के मेष राशि मे स्थित रहते हुए वैशाख मास की अमावस्या का विशेष महत्व है।

कथाः- एक समय में धर्मवर्ण नामक एक ब्राह्मण थे। उन्होने पुष्कर क्षेत्र मे महात्माओं के मुख से सुना कि अन्य युगों मे यज्ञ करने से जो पुण्य प्राप्त होता है उससे कई गुना अधिक पुण्य कलियुग मे भगवान विष्णु का नामस्मरण से ही मिल जाता है। अतः धर्मवर्ण ने सन्यास ग्रहण कर भ्रमण करना आरम्भ कर दिया।

एक दिन वे पितृलोक मे पहुँच गये। वहाँ उन्होने पितरों को घोर कष्ट सहते हुए देखा। धर्मवर्ण ने पितरों का परिचय पूछा। पितरों ने बताया कि हम लोग श्राद्ध और पिण्ड से वंचित होने के कारण कष्ट भोग रहे हैं। हमारे वंश मे धर्मवर्ण नामक एक ही व्यक्ति बचा है वह भी विरक्त हो गया है।

अतः तुम पृथ्वी पर जाकर उसे समझाओ कि वह गृहस्थ होकर सन्तानोत्पत्ति करे और हमे पिण्डदान करे। पितरों की बातें सुनकर धर्मवर्ण बोला कि मै ही आपका वंशज हूँ। अब मै शीघ्र ही भूलोक पर जाकर आपकी अपेक्षाएँ पूर्ण करूँगा। धर्मवर्ण शीघ्र ही भूलोक आ गये। वहाँ मेष राशि मे सूर्य के रहते हुए वैशाख मास मे प्रातः-स्नान य दान य तर्पण और अमावस्या को श्राद्ध करके पितरों का उद्धार कर दिया। तभी से यह पापनाशिनी अमावस्या प्रसिद्ध हो गयी।

माहात्म्य इस अमावस्या को स्नान दान पिण्डदान आदि करने से प्राणी पापमुक्त हो जाता है और उसके पितरों का उद्धार हो जाता है।

धनवान बनाते हैं चमत्कारी शनि मंत्र

कष्ट-पीड़ाओं से मुक्ति के लिए शनि का ध्यान करते हुए नीचे लिखे शनि मंत्रों से उपासना बहुत ही मंगलकारी बताई गई है। शनिदेवजी को प्रसन्न करने के लिए नीचे दिए गए किसी भी एक मंत्र का जाप करें।

शनिवार, शनिदेवजी का दिन है। शनि उपासना से दुख, दरिद्रता, दुर्गति से दो-चार न होकर जीवन में सौभाग्य, दौलत, सफलता और सम्मान प्राप्त होता है।

शास्त्रों में शनिवार के दिन ऐसी ही मनोरथ सिद्धि व कष्ट-पीड़ाओं से मुक्ति के लिए शनि का ध्यान करते हुए नीचे लिखे शनि मंत्रों से उपासना बहुत ही मंगलकारी बताई गई है।

शनिदेवजी को प्रसन्न करने के लिए नीचे दिए गए किसी भी एक मंत्र का जाप करें। जाप संध्याकाल के समय करें-

वैदिक मंत्र

ऊँ शनि नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शनि योरभि स्रवन्तु नरू।।

नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्
छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।

''नर ही नारायण''

दूसरों का उपकार करना ही पुण्य है,
दूसरों को सताना ही पाप है

उपरोक्त पंक्तियों ही हिन्दू धर्म में सेवा का मूल आधार है। हिन्दू धर्म में मानवता के विषय को बेहद महत्वपूर्ण और सर्वोपरि माना जाता है। मानवता की सेवा के संदर्भ में अगर हिन्दू धर्म के दर्शन और प्रमुख तत्व की बात करें ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्हें देखकर यह समझ आता है कि हिन्दू धर्म का मुख्य जोर प्राणी और मानवता की सेवा कर भगवान को पाने की होती है। आइए समझे ऐसे ही कुछ बिन्दुओं को जो हिन्दूओं के प्राणी सेवा के भाव को जाहिर करते हैं।

हिन्दू धर्म में एक कहावत है कि ''नर ही नारायण होता है'' अर्थात मनुष्य में ही भगवान मौजूद है। पुराणों में बताया गया है कि मनुष्य के हाथों में आगे के हिस्से में (अंगुलियों की तरफ) लक्ष्मी जी, मध्य भाग में सरस्वती और निचले भाग में नारायण यानि भगवान विष्णु का वास होता है। इस तरह मनुष्य का शरीर साक्षात मंदिर की तरह ही है और मंदिर की पूजा की जाती है।

हिन्दू धर्म में हर पूजा और अनुष्ठान के बाद दान देने और भोज कराने का विधान है। दान देने और भंडारा कराने के पीछे मानसिकता समाज के पिछड़े वर्ग की सेवा करना होता है।

हिन्दू धर्म में पेड़-पौधों और जानवरों को भी पूजनीय बना कर उनकी रक्षा और सेवा सुनिश्चित की गई है। गाय को यहां माता का दर्जा दिया जाता है वहीं कौओं जैसे पक्षियों को श्राद्ध अर्पित किया जाता है।

हिन्दू धर्म में मानवता के महत्व को दर्शाने के लिए उपरोक्त उदाहरण कम लेकिन बेहद महत्वपूर्ण हैं। इस धर्म की विचारधारा और लय पूरी तरह से मानवता को सबसे ऊपर रखती हैं।

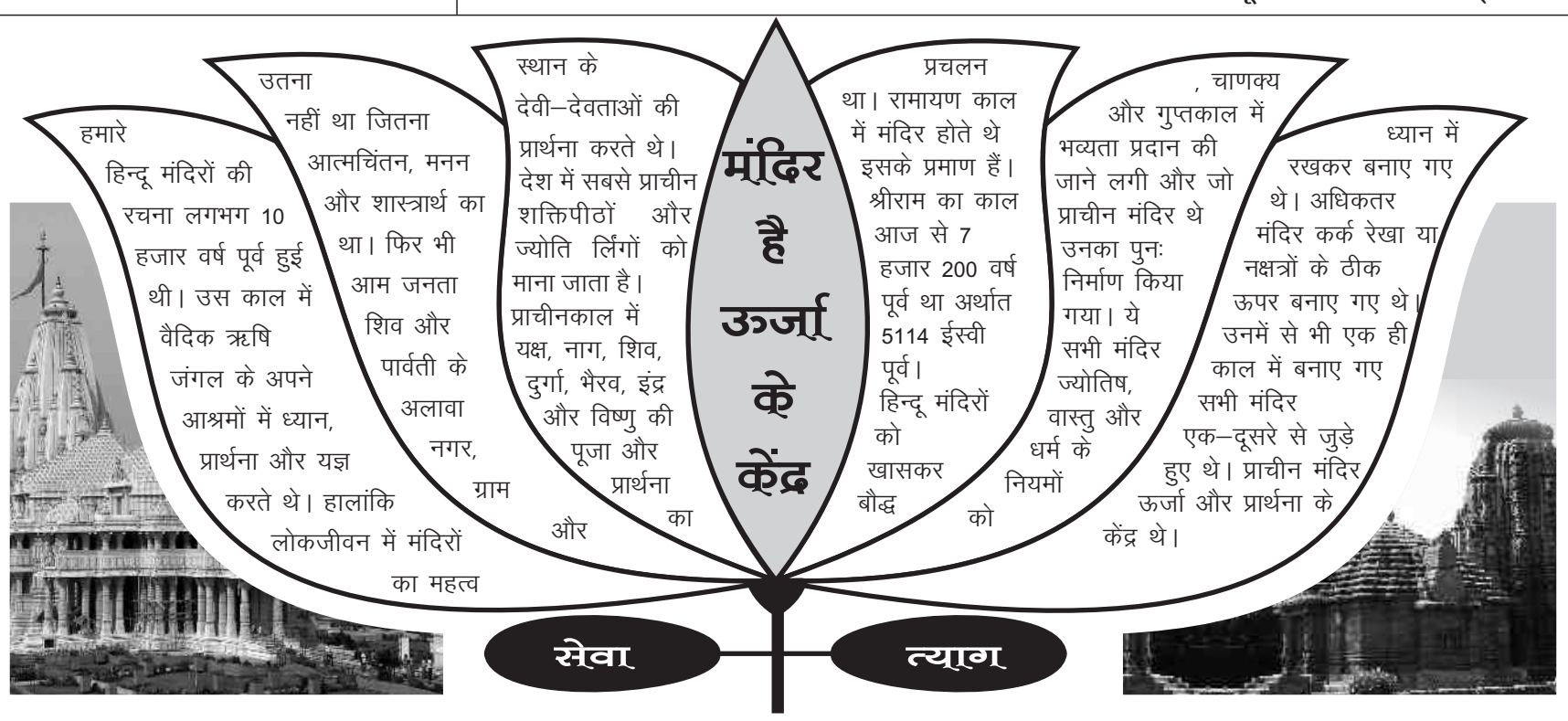

गोस्वामी तुलसीदास की धार्मिक विचारधारा

उनके विचार से वही धर्म सर्वोपरि है जो समग्र विश्व के सारे प्राणियों के लिए शुभंकर और मंगलकारी हो और जो सर्वथा उनका पोषक, संरक्षक और संर्वधक हो। उनके नजदीक धर्म का अर्थ पुण्य, यज्ञ, यम, स्वभाव, आचार, व्यवहार, नीति या न्याय, आत्म-संयम, धार्मिक संस्कार तथा आत्म-साक्षात्कार है। उनकी दृष्टि में धर्म विश्व के जीवन का प्राण और तेज है।

सत्यतः धर्म उन्नत जीवन की एक महत्त्वपूर्ण और शाश्वत प्रक्रिया और आचरण-संहिता है जो समष्टि-रुप समाज के व्यष्टि-रुप मानव के आचरण तथा कर्मों को सुव्यवस्थित कर रमणीय बनाता है तथा मानव जीवन में उत्तरोत्तर विकास लाता हुआ उसे मानवीय अस्तित्व के चरम लक्ष्य तक पहुंचाने योग्य बनाता है।

विश्व की प्रतिष्ठा धर्म से है तथा वह परम पुरुषार्थ है। इन तीनों धामों में उनका नैक प्राप्त करने के प्रयत्न को सनातन धर्म का त्रिविध भाव कहा गया है। त्रिमार्गगामी इस रुप में है कि वह ज्ञान, भक्ति और कर्म इन तीनो में से किसी एक द्वारा या इनके सामंजस्य द्वारा भगवान की प्राप्ति की कामना करता है उसकी त्रिपथगामिनी गति है।

वह त्रिकर्मरत भी है। मानव-प्रवृत्तियों में सत्य, प्रेम और शक्ति, ये तीन सर्वाधिक ऊर्ध्वगामिनी वृत्तियां हैं। धर्म है आत्मा से आत्मा को देखना, आत्मा से आत्मा को जानना और आत्मा में स्थित होना।

उन्होंने सनातन धर्म की सारी विधाओं को भगवान की अनन्य सेवा की प्राप्ति के साधन के रुप में ही स्वीकार किया है। उनके समस्त साहित्य में विशेषतः भक्त - स्वभाव वर्णन, धर्म-रथ वर्णन, संत-लक्षण वर्णन, ब्राह्मण-गुरु स्वरुप वर्णन तथा सज्जन-धर्म निरुपण, आदि प्रसंगों में ज्ञान, विज्ञान, विराग, भक्ति, धर्म, सदाचार एवं स्वयं भगवान से संबंधित आत्म-बोध तथा आत्मोत्थान के सभी प्रकार के श्रेष्ठ साधनों का सजीव चित्रण किया गया है। उनके काव्य-प्रवाह में उल्लसित धर्म-कुसुम मात्र कथ्य नहीं बल्कि, अलभ्य चारित्र्य हैं जो विभिन्न उदात्त चरित्रों के कोमल वृत्तों से जगतीतल पर आमोद बिखेरते हैं।

गतांक से आगे ...

मानव मन के बोल

पिण्डवाड़ा की पीड़ा

शायद महान गंगाधर तिलक जी ने कहा। बंधुआ मजदूर बनाना पशुता है। दहेज लेना पाप है। कन्या भ्रूण हत्या करना महान् पाप है। किसी का अपमान करना अच्छी प्रकृति नहीं है। अप्रिय बोलना मनुष्यता का गुण नहीं है। वो अवगुण जैसे रामायण में कहा कि ऐसी नारी शोभा नहीं पाती जिसने गहने बहुत पहन रखे हो और वस्त्रहीन हो। वस्त्र का अर्थ है मर्यादा। जैसे हमारे शरीर की चमडी हमारा वस्त्र हैं भगवान ने बना के भेजा है। हमें चमड़ी रूप वस्त्र पहना के भेजा है। फिर तुम किस शिष्टाचार में हो? कपास बनाया भगवान ने हमारे लिए। संत ने कहा है कितना निर्मल, सफेद, कितना काम आने वाला। मैं तो बार-बार सोचता हूँ एक ही जीवन में आया हूँ। किसी के काम आ जावे, हमारा व्यवहार काम आ जाए। कोई राम-राम करे तो डबल राम-राम करें। कोई नमस्ते करे तो उसे डबल नमस्ते करें। कोई झुके तो हम ज्यादा झुक जाएं। एक महापुरूष को किसी ने कहा था। मदन मोहन जी जिनको प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के काल में भारत रत्न मिला तो उनको कहा मदन मोहन जी मेरे को सौ गालियां दे के देख लो मुझे गुस्सा नहीं आयेगा। वो हंस दिए मालवीय जी बोले भईया दो बात सुनो पहले तो गालियां आती ही नहीं। अपशब्द मेरे शब्द कोश में ही नहीं है। गुस्सा हमारे स्वभाव में नहीं है। कभी-कभी लाना पड़ता है मजबूरी से क्योंकि हमारा स्वभाव शान्ति का है। क्रोध, गुस्सा, झूठ बोलना, ये लाना नहीं चाहिए।

क्रमश अगले अंक में ...

सम्पादकीय

रियासत काल की बात है। एक महारानी को एक दिन नदी–विहार की सुझी। आदेश मिलने की देर थी, तत्परता के साथ उपवन में व्यवस्था की गई। महारानी ने जी भर विहार का आनन्द लिया। दिन ढलने लगा और शीतल हवाएं चली तो महारानी को सर्दी अनुभव हुई, उन्होंने सेविकाओं को अग्नि का प्रबन्ध करने का आदेश दिया। सेविकाओं ने काफी खोज–बीन की लेकिन सूखी लकड़ियां नहीं मिली। उन्होंने महारानी को अपनी असमर्थता बताई। महारानी ने आदेश दिया–''सामने जो झोपड़ियां दिख रही हैं, उन्हीं को ईंधन के रूप में काम ले लिया जाए।'' झोंपड़ियां तोड़ दी गई और महारानी के लिए आग तापने का प्रबन्ध हो गया।

दूसरे दिन झोपड़ी वालों ने महाराजा से गुहार की। महाराजा ने गम्भीरता पूर्वक विचार किया। उन्होंने स्वयं को उन गरीबों की जगह रख कर देखा–उनकी वेदना का अनुभव किया। तब निर्णय दिया कि महारानी राजमहल छोड़ कर निकले, हाथ में कटोरा लेकर भिक्षा मांग कर धन एकत्र करें, उस धन से झोंपड़ियों का पुनर्निर्माण कराए : तभी पुनः राजमहल में प्रवेश करें।

अस्तु ! दूसरों की वेदना का अनुभव करने के लिए हमें स्वयं को उसके स्थान पर खड़ा होना पड़ेगा। महापुरुष एक शाश्वत नियम बता गए है–'दूसरों के साथ वही व्यवहार करो, जो तुम्हें अपने लिए पसंद हो' ऐसे व्यवहार के लिए व्यक्ति को अपना 'स्व' छोड़ना पड़ेगा। जब हम अपने सोच को इस दिशा में ले जाएंगे, तभी अपने कर्त्तव्य का सही निर्धारण कर पाएंगे।

ईश्वर के करीब लाता है दया–भाव

'दया धर्म मूल है'। सभी धर्मग्रंथों में दया पर ही अधिक जोर दिया गया है। अगर आप दया नहीं कर सकते हैं तो आपका यह मानव जीवन निरर्थक है। यह तो उसी प्रकार की बात हुई कि जन्म लिया, खाए–पीए, बड़े हुए, विवाह–शादी हुई, वंशवृद्धि की परिवार को आगे बढ़ाया और कालांतर में जीवन यात्रा पूरी कर पहुंच गए भगवान के घर। ऐसा जीवन तो पशु–पक्षी भी जीते हैं।...... तो फिर हम इंसानों व पशु–पक्षियों में क्या अंतर रह जाता है ?

अगर आप किसी की एक छोटी–सी भी मदद करते हैं तो वह व्यक्ति कृतज्ञ भाव से आपकी ओर देखता है तब आपको जो आत्म–संतोष मिलता है, उसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता है। कभी आप भूखे बच्चों को रोटी खिलाकर, फटेहाल ठंड में ठिठुरते लोगों को वस्त्र पहनाकर, किसी सताई हुई नारी को यह दिलासा देते हुए कि 'बहन चिंता मत कर, तेरा भाई जिंदा है' उसके सिर पर अगर आप हाथ रखेंगे तो भावुकतावश आपकी आंखों से भी इस बात को लेकर अश्रुधारा बह निकलेगी कि आज मैंने जिंदगी में अच्छा काम किया है। जब ईश्वर के सामने हम अपने कर्मों का हिसाब–किताब देने हेतु खड़े होंगे तो बिल्कुल निश्चिंत होंगे, क्योंकि आपके मन में यह भाव लगा रहेगा कि मैंने अपनी जिंदगी में किसी आत्मा को कभी कोई कष्ट नहीं पहुंचाया। मानव सेवा, माधव सेवाः मानव की सेवा नारायण (भगवान) की सेवा के बराबर मानी गई है।

महाकाल के चरणों में असीम आनंद – प्रशांत अग्रवाल

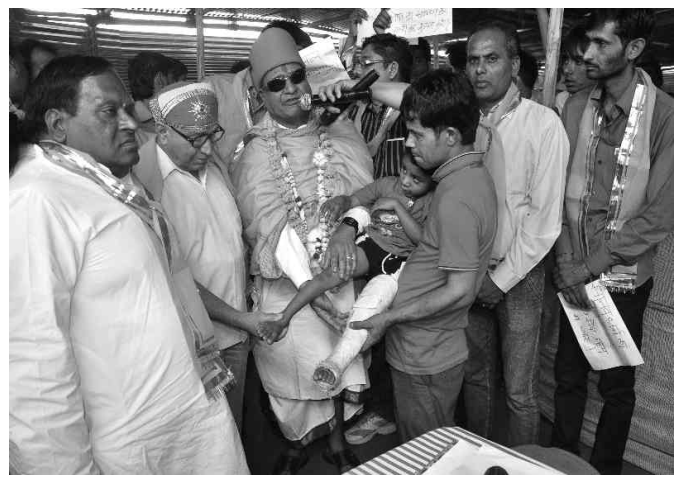

उदयपुर। क्षिप्रा नदी के तट पर, बाबा महाकाल की नगरी में चल रहे सिंहस्थ महाकुंभ में नारायण सेवा संस्थान निरंतर दिव्य कथाओं के आयोजन के साथ–साथ, दिव्यांग बंधुओं को स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान कर रहा है। संस्थापक चेयरमैन डॉ. कैलाश मानव ने बताया कि प्रतिदिन संस्थान के वरिष्ठ चिकित्सक, शल्य चिकित्सा द्वारा उन्हें निःशक्तता से निजात दिलाकर, सशक्त बना रहे हैं। इसके अतिरिक्त जरूरतमंदों को कृत्रिम हाथ–पांव, कैलिपर, बैसाखी, व्हील चेयर, ट्राई साइकिल आदि भेंट कर उन्हें लाभान्वित किया जा रहा है।

संस्थान अध्यक्ष डॉ. प्रशांत अग्रवाल ने बताया कि महाकाल के चरणों में बैठकर पीड़ितों की सेवा करने में असीम आनंद की अनुभूति हो रही है। प्रातःकालीन सत्र में पं. रामकृष्ण शास्त्री के श्रीमुख से प्रस्फुटित श्रीमद्भागवत कथा में उन्होंने कहा कि कथा श्रवण करने मात्र से मनुष्य अपने जीवन की व्यथाओं से निवृति पा लेता है और ईश्वर के चरणारविंद में अपने चित्त को लगाते हुए हरि को हृदय में समाविष्ट कर लेता है।

ज्ञान, वैराग्य और भक्ति की विलक्षणता को बताते हुए उन्होंने कहा कि ज्ञान, वैराग्य आदि साधन एक वृक्ष की तरह हैं। जैसे सारे वृक्ष अंत में फल देते हैं, उसी प्रकार ईश्वर के प्रति ज्ञान और संसार के प्रति वैराग्य धारण करने से भक्ति रूपी फल की प्राप्ति होती है। संचालन कृपा व्यास ने किया।

टाइफाइड (फ्लू) कारण और बचाव

टाइफाइड–टाइफाइड साल्मोनेला टाइफी नामक जीवाणु से होने वाला संक्रामक रोग है। बच्चों को वयस्कों की तुलना में टाइफाइड होने की अधिक संभावना होती है। यह रोग 2 साल की उम्र के बच्चों से लेकर किसी को भी हो सकता है।

लक्षण–बीमारी में लगातार बुखार रहना, भूख कम लगना, मुंह का स्वाद बिगड़ना, उल्टी होना और खांसी–जुकाम भी हो सकता है।

कारण– इस बुखार का कारण साल्मोनेला टाइफी नामक बैक्टीरिया का संक्रमण होता है। यह रोग आंतों, दिल, फेफड़ों, गुर्दे और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव डाल सकता है।

गर्मी के मौसम में टायफायड होने पर लू लगने के कारण बुखार होने का खतरा रहता है। ऐसे में आप कच्चे आम को आग या पानी में पकाकर इसका रस पानी के साथ मिलाकर पीएं।

तुलसी और सूर्यमुखी के पत्तों का रस पीने से भी टायफायड बुखार ठीक होते हैं। करीब तीन दिन तक सुबह–सुबह इसका प्रयोग करें। टायफायड के अलावा, बुखार के कई और कारण भी हो सकते हैं, ऐसे में कुछ बातों का रखें ख्याल

पान का रस, अदरक का रस और शहद को बराबर मात्रा में मिलाकर सुबह–शाम पीने से आराम मिलता है।

बुखार में रोगी को अधिक से अधिक आराम की जरूरत होती है। भोजन का खास ख्याल रखें। बुखार होने पर दूध, साबूदाना, चाय, मिश्री आदि हल्की चीजें खाएं। मिश्री का शर्बत, मौसमी का रस, सोड़ा वाटर और कच्चे नारियल का पानी जरूर पीये।

पानी खूब पीएं और पीने के पानी को पहले गर्म करें और उसे ठंडा होने के बाद पीये। अधिक पानी पीने से शरीर में बुखार का जहर पेशाब और पसीने के रूप में शरीर से बाहर निकल जाता है।

लहसुन की कली पांच से दस ग्राम तक काटकर तिल के तेल में या घी में तलकर सेंधा नमक डालकर खाने से सभी प्रकार का बुखार ठीक होता है।

तेज बुखार आने पर माथे पर ठंडे पानी का कपड़ा रखें तो बुखार उतर जाता है और बुखार की गर्मी सिर पर नहीं चढ़ती है।

फ्लू में प्याज का रस बार–बार पीने से बुखार उतर जाता है और कब्ज में भी आराम मिलता है।

पुदीना और अदरक का काढ़ा पीने से बुखार उतर जाता है। काढ़ा पीकर घंटे भर आराम करें, बाहर हवा में न जाएं।

घरेलू दवाओं से यदि आपको आराम न मिले, तो तुरंत डॉक्टर से संपर्क करें और उनके निर्देशानुसार इलाज करवाएं।

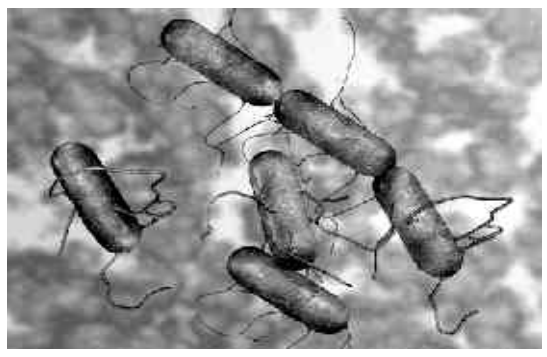

उत्साह उमंग उल्लास

(मानव धर्म शृंखला का तृतीय (3) पुष्प)

गतांक से आगे.......

लफड़ांतु घर गया, कुलदागी को, अपने भाई को, भतीजे को, सबको बताया कि मनुज जी वहाँ नहीं है और उनके घर पर ताला लगा हुआ है। क्यों न हम उनसे अपने पूर्व के कार्यों का बदला ले लें। कुलदागी ने अपने दो अपराधी प्रवृति के साथियों को बुलाया और योजना बनाई कि आज रात्रि को इनके घर का सारा सामान चुरा लेंगे और घर में केरोसीन डालकर आग लगा देंगे। मनुज जी इन सब षड्यंत्रों से बेखबर गंगासागर में आनंद कर रहे हैं, धर्म की सेवा कर रहे हैं। रात्रि को डेढ़ बजे कुलदागी अपने साथियों के साथ मनुज जी के घर में प्रवेश करता है। सामान चुराने के वो सरिये का प्रयोग करते हैं अलमारी तोड़ने के लिये। जब वो अलमारी पर प्रहार करते हैं, खटर–पटर होती है मनुज जी के घर में। घर के पास एक श्वान बैठा रहता था–हमेशा। एक कुत्ता–एक श्वान, जिसको मनुज जी अक्सर रोटी देते थे। जब खटपट होती है तो वो जोर–जोर से चिल्लाता है, भौंकता है। पड़ोसी जागते हैं, दौड़ कर आते हैं तो घर के ताले टूटे हैं। कुलदागी को भनक पड़ती है, कुलदागी अपने साथियों के साथ सामान फटाफट इकट्ठा करता है और घर में आग लगा कर भागता है। पड़ोसी फटाफट आ जाते हैं श्वान के कारण, घर में आग को बुझा देते हैं और कुलदागी का एक साथी पकड़ा जाता है। सुबह मनुज जी का आने का समय भी था, 10 बजे ट्रेन से पधारने वाले थे। पडोसियो 'ने मनुज जी को सुचना दे दी थी कि आपके घर में ऐसा हुआ है, अपराधी को हमने पकड़ लिया है। मनुज जी ने कहा, उसको रखना। पहले मैं आ जाऊँ, फिर ही निर्णय लेंगे। मनुज जी आये, जब उससे सारी बात पूछी तो उसने कुछ भी नहीं उगला। जब पुलिस ने थर्ड डिग्री का प्रयोग किया, उसने सब उगल दिया कि मैंने कुलदागी के कहने से षड़यंत्र किया था। पुलिस को बुलाया जाता है, कुलदागी गिरफ्तार होता है। मनुज जी उस श्वान की सेवा करते थे, श्वान ने अपनी वफादारी निभाई और उनके घर को बचा लिया, पड़ोसियों ने आग लगने से बचा लिया और सामान भी सारा प्राप्त हो जाता है। मनुज जी अक्सर जानवरों की सेवा करते थे, ऐसे थे मनुज जी। अगला प्रसंग है गौ ग्रास का, महत्व जानते हैं गुरुदेव के मुखारविंद से –

गुरुदेवजी– बहुत अच्छा....

अन्न देवता ग्रहण करो अन्न,
अन्न देवता ग्रहण करो अन्न..
मन आरोग्य को बढ़ाओ
मन आरोग्य को बढ़ाओ,
आयु और बल बढ़े हमारा
आयु और बल बढ़े हमारा,
रहे आप की छाया ... रहे आप की छाया,
फिर गौ ग्रास निकालो थोड़ा,
उस पर सब्जी रखना,
अगर मिठाई हो तो वह भी,
प्रेम सहित रखवाना,
इस युग में कर सको नहीं तो,
मानसिक रूप से करिए,
अग्निदेव को भोग लगाकर,
आप स्वयं खाया,

गुरुदेवजी– गौ माता की जय हो। गाय बचेगी, देश बचेगा। साबुन से अपने हाथ धो लेना, अपने मुँह से कुल्ला कर लेना, चरणों पर जल के छींटे लगा देना और अन्न देवता को भोग लगा कर प्रणाम करके गौ ग्रास निकालना, गाय माता के लिये रोटी निकालना, मिठाई भी रखना, सब्जी भी रखना और बड़े प्रेम से गौ माता को ग्रहण कराना, उनको चारा खिलाना और बाँटा देना। वो दूध भी नहीं दे तो भी उनकी सेवा करना। कभी कसाई के हाथों मत बेचना, गौ हमारी माता है। गाय बचेगी–देश बचेगा, यही भारतीय संस्कृति है लाला, ये ही भारतीय संस्कृति है।

क्रमशः

गुरु महिमा

1. जिनके द्वारा ज्ञान मिलने से जगत् की भेददृष्टि समाप्त हो जाती है और वह शिव स्वरूप दिखाई देने लगता है, जिनका स्वरूप एकमात्र सत्य का स्वरूप ही है, उन सद्गुरू को नमन है।
2. जो कहता है कि मैं ब्रह्म को नहीं जानता, वही ज्ञानी है। जो कहता है कि मैं जानता हूँ, वह नहीं जानता। जो स्वयं ही अभेद एवं भावपूर्ण ब्रह्म है उस सद्गुरू को नमन है।
3. जिस श्रीगुरू के कारण रूप होने से कार्यरूप संसार का ज्ञान होता है, ऐसे कार्य–कारण रूप श्रीगुरू को नमन है।
4. अनेकों रूप वाले इस संसार में कहीं भी कुछ भी भिन्नता नहीं है, एकमात्र कार्य–कारण भाव ही है। ऐसे कार्य–कारण भावरूप श्रीगुरू को नमन है।
5. जिनके दोनों चरण कमल शिष्य के जीवन में आने वाले सभी द्वन्द्वों, सर्व विधि तापों और सब तरह की आपदाओं का निवारण करते हैं। उन श्रीगुरू को मैं प्रणाम करता हूँ।

मुख्य कार्यकारी अधिकारी–कैलाश 'मानव'
मार्गदर्शक–प्रशान्त अग्रवाल,
जगदीश आर्य, देवेन्द्र चौबीसा
मार्गदर्शिका–कमलादेवी, वन्दना अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक–सोहन लाल गाडरी
संपादक–लक्ष्मीलाल गाडरी
संपादन सहयोगी–घनश्याम सिंह राठौड़

मुद्रक–न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, प्रकाशक–कमलादेवी, मुद्रण स्थल–13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर–3 उदयपुर (राज.), प्रकाशन स्थल– ई–डी–71 बप्पा रावल नगर, हिरण मगरी, सेक्टर–6, उदयपुर (राज.)
सम्पादक–लक्ष्मीलाल गाडरी, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2014/59353 टेलिफोन नं. – 0294–6622222 मो.–09587720000,09928022275,09214657807,09785039524 www.mannkijeet.com, mankijeet2015@gmail.com